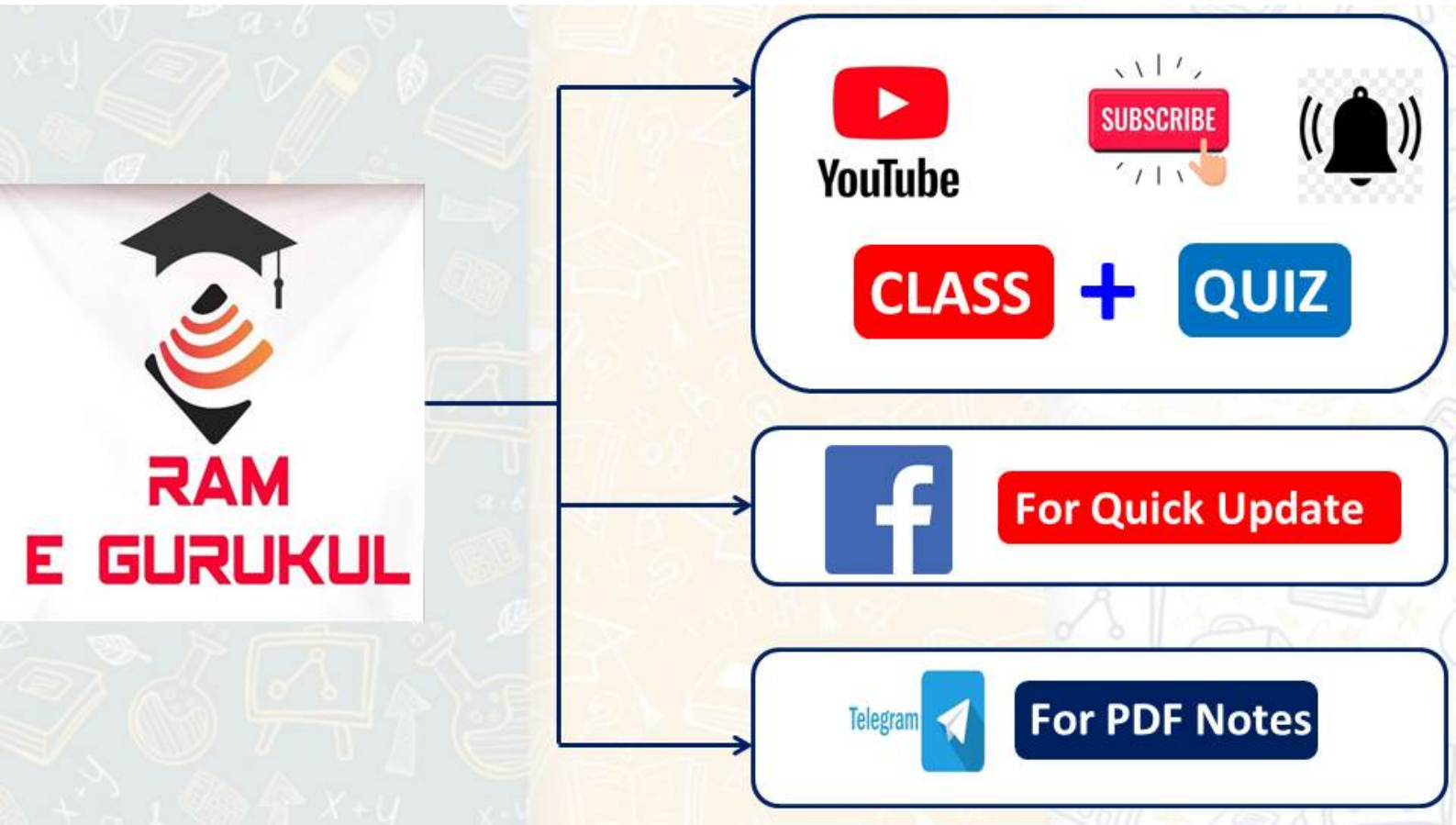
RAM
E GURUKUL
YouTube
SUBSCRIBE
CLASS
+
QUIZ
For Quick Update
Telegram
For PDF Notes

* दिल्ली सल्तनत *

गुलाम वंश

1206 - 1290

- प्रथम शासक - ऐबक
- संस्थापक - ऐबक
- वंश - सगी तुर्क
- गुलाम का गुलाम - इल्तुतमिश
- प्रथम मुस्लिम शासक - इल्तुतमिश
- प्रथम महिला शासिका - रजिया
- मंगोल (चंगेज खाँ) - इल्तुतमिश

कुतुबुद्दीन ऐबक

1206 - 1210

- गुलाम वंश का प्रथम शासक
- तुर्क जनजाति
- गोरी द्वारा - अमीर-ए-आखूर पद
- सुल्तान की उपाधि नहीं धारण किया
- लाखबख्श (लाखों को दान देने वाला)
- कुतुबमिनार का निर्माण कार्य प्रारम्भ (दिल्ली)
- ढाई दिन का झोपड़ा (मस्जिद) - अजमेर
- कुतुबमिनार निर्माण
  - ऐबक (प्रारम्भ)
  - पूर्ण (इल्तुतमिश के समय में)
  - दो मंजिल निर्माण - फिरोज तुगलक
- राजधानी - लाहौर
- मृत्यु - चौगान खेलते हुए

Scanned by CamScanner

इल्तुतमिस

1210 - 1236

- लाहौर से दिल्ली को राजधानी बनाया
- सर्वप्रथम शुद्ध अरबी सिक्के प्रारम्भ किया
- नियमित सिक्के जारी किए
  - टंका (चांदी)
  - जीतल (तांबा)
- प्रथम मुस्लिम शासक
- सुल्तान - ए - आजम की उपाधि धारित किया
- गुलाम का गुलाम
- इल्बारी जनजाति का तुर्क
- मंगोलों (चंगेज खाँ) का आक्रमण
- तुर्कान - ए - चहलगानी या चालीसा
- इक्ता व्यवस्था
- चंगेज खाँ का मूल नाम - तेमुचिन

रजिया

- 1236 - 1240 ई.
- जलालुद्दीन याकूत (अबीसीनियाई) से अनुराग था।
- राज्यारोहण में योगदान - दिल्ली की सेना, जनता व officer
- पर्दा प्रथा का त्याग (कुबा व कुलाह धारण किया)
- "यदि रजिया स्त्री न होती तो उसका नाम भारत के महान मुस्लिम शासकों में लिया जाता" - एलफिंस्टन
- अल्तूनिया से विवाह
- 13 oct 1240 में हत्या
- सत्ताच्युत - तुर्कों द्वारा

Scanned by CamScanner

बलबन

- 1265 - 1287
- गयासुद्दीन बलबन (इल्बारी तुर्क)
- रक्त और लौह की नीति
- उपाधि - जिल्ले-इलाही
- फारसी त्योहार - नौरोज
- 'निमामत-ए-खुदाई' सिद्धान्त का प्रतिपादन
- 'तुर्कान-ए चहलगानी' को समाप्त किया
- बंगाल के विद्रोह को समाप्त किया
- गढमुक्तेश्वर की मस्जिद की दिवारों पर अपने शिलालेख में स्वयं को 'खलीफा का सहायक' कहा
- सिजदा-पाबोस प्रथा को शुरू किया।

खिजजी वंश

- 1290 - 1320 ई.
- स्थापना - जलालुद्दीन खिलजी (1290-96)
- अलाउद्दीन खिलजी (1296 - 1316 ई.)

अलाउद्दीन खिलजी

- 'राजत्व का सिद्धान्त' का प्रतिपादन
- धर्म को राजनीति से अलग रखा
- "जब उसने राजत्व को प्राप्त किया तो वह शरीयत के नियमों और आदेशों से पूर्णतः स्वतंत्र था।" - बरनी द्वारा अलाउद्दीन के लिये।

Scanned by CamScanner

- सिकन्दर सानी की उपाधि धारण किया
- मंगोलो के विरुद्ध लड़ते हुए मृत्यु - जफर खाँ
- देवगिरि आक्रमण के समय देवगिरि का शासक - रामचंद्र देव
- दक्षिण अभियान का सेनापति मलिक काफूर (हजारदिनारी) को अलाउद्दीन ने गुजरात विजय के 6 दीनार खरीदा था।
- मूल्य नियन्त्रण व बाजार सुधार की नीति प्रारम्भ किया
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) प्रारम्भ किया
- चरी अथवा गृहकर (House Tax)
- दक्षिण अभियान के क्रम —
  - देवगिरि → राजधानी → देवगिरि → रामचन्द्र देव
  - तेलंगाना → वारंगल → प्रतापरुद्र देव
  - होयसल → द्वार समुद्र → बल्लाल तृतिया
  - मदुरा → कुलशेखर
- खिलजी द्वारा किये गये कार्य
  - दीवाने-ए-वजारत → वित्त विभाग
  - दिवान-ए-आरिज → सैन्य विभाग
  - दीवान-ए-इंशा → डाक विभाग (पत्राचार)
  - दीवने खालसत → पत्राचार द्वारा विदेशी राजदूतो से सम्पर्क

Scanned by CamScanner

- दिवाने रियासत — आर्थिक मामलों का विभाग
- मुहतसिब — मापतौल निरीक्षक अधिकारी
- बरीद-ए-मुमालिक — गुप्तचर अधिकारी
- घोड़ों को दागने की प्रथा
- सैनिकों का हुलिया रखने की प्रथा
- दो अस्पा
- शराब तथा भांग पर रोक
- भूमि को बिस्वा में मापने की प्रथा
- दरबारी कवि — अमीर खुसरो, हसन देहलवी

तुगलक वंश →
- 1320 – 1414 ई.
- प्रथम सुल्तान — गयासुद्दीन तुगलक
  - गाजी मलिक नाम से प्रसिद्ध
  - नहर निर्माण प्रोत्साहन करने वाला प्रथम सुल्तान
  - "हुनोज दिल्ली दूरस्त"
  - निजामुद्दीन औलिया से मनमुटाव
- सर्वाधिक समय तक देश में तुगलक वंश का शासन रहा
- अंतिम शासक — नासिरुद्दीन महमूद (तैमूर का आक्रमण - 1398 ई.)

Scanned by CamScanner

मुहम्मद बिन तुगलक

- दिल्ली सल्तनत का सर्वाधिक विद्वान शासक जो खगोलशास्त्र, गणित, एवं आयुर्विज्ञान में महारत था।
- 'अमीर-ए-कोही' (कृषि विभाग) (दीवाने कोही)
- राजधानी दिल्ली से दौलताबाद परिवर्तित किया
- सर्वप्रथम सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन
- नया स्वर्ण सिक्का जारी किया जिसे दिनार कहा गया
  - टोकन मुद्रा के रूप मे (सैन्य शक्ति अभिवृद्धि के लिये)
- 'प्रिंस आफ मेनिरियस' की उपाधि मिली थी।
- इब्नबतूता (मोरक्को) MBT के काल में आया था।
  - रिहला-उल-रेहला, डाक व्यवस्था
- 'होली त्योहार' में भाग लेने वाला प्रथम सुल्तान
- "राजा को प्रजा से मुक्ति मिली व उसे राजा को" बदायूनी द्वारा MBT को।
- मूल नाम - जौना खाँ
- उपाधि - उलूग खाँ
- बुद्धिमान मूर्ख शासक के रूप में जाना जाता था।
- अमीर-ए-कोही (दीवान-ए-कोही विभाग का प्रमुख)
- प्लेग (ब्लैक डेथ) नामक बिमारी फैली
- जैन विद्वान राजशेखर को संरक्षण दिया
- MBT के काल में सर्वाधिक विद्रोह हुए

Scanned by CamScanner

फिरोज तुगलक

- 'रोजगार कार्यालय' की स्थापना
- दीवान-ए-खैरात (दान विभाग)
- सबसे अधिक गुलाम थे।
- दीवान-ए-बंदगान" (दास विभाग)
- सर्वप्रथम लोक निर्माण विभाग (BPWD) की स्थापना।
- कुतुबमीनार की चौथी मंजिल का निर्माण
- नहरों के सबसे बड़े जाल का निर्माण
- हक्क-ए-शर्ब (सिंचाई विभाग)
- ब्राम्हणों पर जजिया कर लगाया
- मैरिज ब्यूरो, जगन्नाथ मंदिर (पुरी) को क्षति किया
- फलों की गुणवत्ता पर सुधार।
- सर्वप्रथम अपनी माप का प्रयोग किया
- टोपरा तथा मेरठ से दो अशोक स्तंभ लेकर दिल्ली लाया।
- अनुवाद विभाग की स्थापना।
- स्वयं को खलीफा का नायब कहा
- राज्य खर्च से 'हज की व्यवस्था' करने वाला पहला भारतीय शासक।
- 'दार-उल-शफा' (एक खैराती अस्पताल)
- सल्तनत काल का अकबर (इलियट व एल्फिंस्टन द्वारा)

जजिया कर

- भारत में सर्वप्रथम मुहम्मद बिन कासिम द्वारा लगाया गया था।
- फिरोज तुगलक ने ब्राम्हणों से लिया।
- अकबर-I ने समाप्त कर दिया था
- औरंगजेब ने पुन: लगा दिया।
- फर्रुखशियर ने एक बार पुन: समाप्त किया
- अंत में मुहम्मदशाह ने बंद कर दिया।

Scanned by CamScanner

सैयद वंश

- स्थापना - खिज्र खाँ
- खिज्र खाँ ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं किया
  - उपाधि - रैयत-ए-आला
- मुबारक शाह ने 'शाह' की उपाधि धारण की एवं अपने नाम के सिक्के जारी किये।
- अंतिम शासक - आलम शाह (अलाउद्दीन आलमशाह)
- → शासन की बागडोर लोदियों के हाँथ में चली गयी।

लोदी वंश

- स्थापना - बहलोल लोदी द्वारा
- शासन - 1451 — 1526 ई. तक
- अफगान मूल के थे।
- शासन क्रम → ~~सिकन्दर लोदी~~
  - → बहलोल लोदी → सिकंदर शाह - इब्राहिम लोदी

सिकंदर लोदी

- पूर्व नाम - निजाम खाँ
- गज-ए-सिकंदरी (भूमि मापन हेतु पैमाना)
- आगरा की स्थापना (1504 ई.)
  - 1506 ई. में राजधानी बनाया
- → गुलरुखी (इस नाम से फारसी में कविताएं लिखता था।
- कुतुबमीनार की मरम्मत करवायी
- मोहर्रम और ताजिया बंद करना दिया

Scanned by CamScanner

SL →
- अन्न के ऊपर से कर समाप्त किया (जकात)
- फरहंगे - ए - सिकंदरी (आयुर्वेदिक ग्रंथ)

इब्राहिम लोदी →
- लोदी वंश का अन्तिम शासक
- पानीपत का प्रथम युद्ध (21 APL 1526 ई.)
  - → बाबर व इब्राहिम लोदी के मध्य
- दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जो युद्ध भूमि में मारा गया।

सल्तनतकालीन स्थापत्य →
- कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद - ऐबक द्वारा
  - → जैन मन्दिर → विष्णु मन्दिर (इनके बाद इसका निर्माण)
  - → भारतीय-इस्लाम शैली में प्रथम स्थापत्य
- कुतुबमिनार - ऐबक द्वारा
  - → इल्तुतमिश (3 मंजिल बनवायी)
  - → फिरोज शाह तुगलक (मरम्मत + 1 मंजिल)
  - → सिकंदर लोदी (मरम्मत करवाया)
- अढाई दिन का झोपड़ा - ऐबक (अजमेर में)
  - → पूर्व में संस्कृत विद्यालय था
- अलाई दरवाजा - अलाउद्दीन खिलजी द्वारा
  - → कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का प्रवेश द्वार
  - → पहली बार मेहराब का निर्माण (घोड़े की नाल की तरह)
- ऊखा मस्जिद - मुबारक शाह खिलजी (भरतपुर)
- फिरोजशाह कोटला - फिरोजशाह तुगलक (दिल्ली)
- काली मस्जिद - फिरोजशाह तुगलक (दिल्ली)

Scanned by CamScanner

सल्तनतकाल Imp facts

- आरिज-ए-मुमालिक – सैन्य विभाग का प्रधान
- इंशा-ए-मुमालिक – पत्राचार विभाग का प्रधान
- रसालत-ए-मुमालिक – विदेश विभाग " "
- बरीद-ए-मुमालिक – गुप्तचर विभाग " "
- काजी-उल-कुजात – न्याय विभाग " "
- मुफ्ती – धर्म की व्याख्या करने वाला
- मुशरिफ – किसानो से भूमि लेने वाला
- वक्फ – वह भूमि जो धार्मिक कार्यो के लिये सुरक्षित

" अन्य मुसलमानों के एक बेटा हो सकता है या दो, मेरे अनेक हजार बेटे हैं " – मोहम्मद गोरी

" विश्वासघात में उसका आरम्भ हुआ, दानशीलता पर वह विकसित हुआ और आतंक में उसका अंत हुआ "

– R.S. Sharma द्वारा अलाउद्दीन खिलजी के लिये

Scanned by CamScanner

सल्तनतकालीन स्वतंत्र प्रांतीय राज्य

- उ० भारत
  - जौनपुर
  - कश्मीर
  - मालवा
  - राजपुताना
  - गुजरात
  - उड़ीसा
- द० भारत
  - विजयनगर
  - बहमनी

जौनपुर

- स्थापना - फिरोजशाह तुगलक द्वारा (1359)
- जौना खाँ / जूना खाँ / MBT की स्मृति में
- स्वतंत्र सल्ला का संस्थापक
  - मलिक सरवर (हिजड़ा)
    - शर्की राजवंश का संस्थापक
- भारत का शिराज
- शर्की राजवंश के शासक
  - मलिक सरवर (संस्थापक)
  - मुबारक शाह
  - इब्राहिम शाह
  - महमूद शाह
  - मुहम्मद शाह
  - हुसैन शाह (अन्तिम शासक)
- मलिक मोहम्मद जायसी का निवास स्थल (पदमावत)

Scanned by CamScanner

गुजरात राज्य

- वास्तविक संस्थापक – अहमदशाह
  - → अहमदाबाद की स्थापना की
- गुजरात में जजिया कर लगाया
- 1292 में अलाउद्दीन खिलजी ने सल्तनत में मिला लिया।
- बाद में अकबर ने मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

मालवा राज्य

- परमार वंश (दसवीं शताब्दी)
  - स्थापना – उपेन्द्र या कृष्णराज
  - उत्पत्ति – अग्निकुण्ड से
  - राजधानी – धार नगरी
- → इल्तुतमिश और अलाउद्दीन ने मालवा को लूटा।
- → खिलजी वंश
  - महमूद खिलजी व राणा के मध्य युद्ध हुआ – अनिर्णीत रहा
  - विजय स्तंभ – राणा द्वारा (चित्तौड़ में)
- 1531 ई. में बहादुरशाह ने मालवा को गुजरात में मिला लिया।

कश्मीर राज्य

- चौदहवीं सदी में शाह मिर्जा अथवा मीर द्वारा मुस्लिम वंश की स्थापना
- सुल्तान सिकंदर – तैमूर का आक्रमण इसके समय हुआ था। तैमूर ने कश्मीर में आक्रमण नहीं किया
- जैनुल आबिदीन (सर्वाधिक समय तक शासन)
  - → धार्मिक सहिष्णु था (मांस नहीं खाता था)
  - → गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगाया
  - साहित्य चित्रकला एवं संगीत को प्रोत्साहन
  - "कश्मीर का अकबर"

Scanned by CamScanner

विजय नगर साम्राज्य (1336 - 1565 ई.)

- संगम वंश → संस्थापक → हरिहर व बुक्का
- सालुव वंश → नरसिंह
- तुलुव वंश → वीरन सिंह
- अरवीडु वंश → तिरुमल्ल

संगम वंश →
- स्थापना – हरिहर - बुक्का
- प्रथम शासक – हरिहर - 1
- अन्तिम शासक – विरूपाक्ष - II
- हरिहर - 1
  - पहली राजधानी – अनेगोण्डी, बाद मे विजयनगर
  - होयसल को अपने राज्य में मिला लिया
  - बहमनी व विजयनगर मे संघर्ष प्रारम्भ
- बुक्का प्रथम
  - दूसरा शासक बना
  - अभिलेखों में इसे पूर्वी, प०, द० सागरों का स्वामी कहा गया
  - मदुरा को विजनगर में शामिल कर लिया
  - उपाधि – "वेदमार्ग प्रतिष्ठापक"
- हरिहर - II
  - उपाधियां – राजाधिराज और राजपरमेश्वर
  - राजव्यास (राजवाल्मीकि) उपाधि भी प्रदान की गयी।

Scanned by CamScanner

→ देवराय - I
- → तुंगभद्रा नदी पर बांध बनाकर नहर निकाली।
- → निकोलो कोंटी (इटली) यात्री विजयनगर आया।
- → तेलगू कवि श्रीनाथ को संरक्षण
- → हरविलास नामक ग्रंथ की रचना।

→ देवराय - II
- → सेना मे मुसलमानों की भर्ती प्रारम्भ किया।
- → तुर्की धनुर्धरो को सेना मे भर्ती किया।
- → अब्दुर्रज्जाक (फारस का राजदूत) आया था।

→ मल्लिकार्जुन
- → उपाधि - गजबेटकर
- → 'प्रौढ देवराय' कहा गया।
- → चीनी यात्री महुयान आया।

→ विरूपाक्ष - II (अन्तिम शासक)

सालुव वंश →
- संस्थापक - सालुव नरसिंह
- सालुव नरसिंह
  - उडीसा के शासक ने बंदी बना लिया।
- इम्मादि नरसिंह
  - → यह अल्पायु का था नरसिंह का सेना नायक इसका संरक्षक था।
    - → नरसा नायक

तुलुव वंश

- संस्थापक - वीर नरसिंह था
  - उपाधि - भुजबल
- अन्तिम शासक - तिरुमल था
- कृष्णदेवराय (1509) - गद्दी पर बैठ
  - बाबर ने बाबरनामा में तत्कालीन शासकों में सबसे शक्तिशाली शासक कहा।
  - प्रदेनी का युद्ध - बीदर और कृष्णदेवराय के मध्य, युसुफ अदिलशाह को पराजित कर मार डाला। (1509-10)
  - उपाधि - "यवनराज्य स्थापनाचार्य"
- अष्ट दिग्गज - (8 महान विद्वान व कवि)
  - तेलगू साहित्य का स्वर्णिकाल
  - इनमें पेड्डाना सर्वप्रमुख थे।
- पुर्तगाली यात्री - डुआर्टे बारबोसा कृष्णदेवराय के समय विजयनगर की यात्रा की
- आन्ध्र भोज - कृष्णदेवराय को कहा जाता है।
- हजारा मन्दिर, विट्ठलस्वामी मन्दिर एवं चिदम्बरम मन्दिर - कृष्णदेवराय द्वारा निर्माण
- अच्युत देवराय - कृष्णदेवराय का उत्तराधिकारी
- सदाशिव - बड़ी संख्या में मुस्लिमों की भर्ती प्रारम्भ की। (सत्ता रामराय के पास)

Scanned by CamScanner

तालीकोट या राक्षसीतंगड़ी युद्ध

- विजयनगर और द० की मुस्लिम सल्तनतें
  - पक्ष – A – विजयनगर
  - पक्ष – B – अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बीदर
  - बरार इस संघ में शामिल नहीं था।
- युद्ध के समय विजयनगर का शासक – सदाशिव
- युद्ध प्रारम्भ – 23 Jan 1565 ई.
- स्थान – राक्षसी-तंगड़ी
- प्रारम्भ में रामराय ने मुस्लिम सेनाओं को पराजित कर दिया किन्तु रामराय की मुस्लिम सेना विपक्ष से जा मिली।
- रामराय मारा गया, संघ सेना ने विजयनगर को खूब लूटा।

अरावीडु वंश → श्री रंग – III अरावीडु वंश और विजयनगर साम्राज्य का अन्तिम शासक था।

विजयनगर प्रशासन

- केन्द्रीय प्रशासन – राजतंत्रात्मक
- राजा ईश्वर के समान माना जाता था, जिसे राय कहा जाता था
- राजपरिषद् – राजा की शक्ति पर नियंत्रण की सबसे शक्तिशाली संस्था
- मंत्रिपरिषद् – दूसरी प्रमुख संस्था, जिसका प्रमुख प्रधानी या महाप्रधानी होता था।
- कर्णिकम – लेखाधिकारी

प्रांतीय प्रशासन

- प्रांत (विजयनगर साम्राज्य प्रांतों में बंटा था)
- मण्डल (कमिश्नरी)
- कोट्टम/वलनाडु (जिले)
- नाडु/तहसील (तहसील)
- मेलाग्राम (ग्रामों का समूह)
- ऊर/ग्राम (प्रशासन की सबसे छोटी इकाई)

स्थानीय प्रशासन

- मध्यसभा, ऊर एवं महाजन नामक ग्रामीण संस्थाएं थी
- नाडु – गाँव से बड़ी राजनीतिक इकाई थी।

Scanned by CamScanner

विजयनगर साम्राज्य के कर

- कदमई, मगमाई, वरम, भोगम, आदि।
- विवाह कर लिया जाता था।
- वेश्याओं से प्राप्त कर से पुलिस को वेतन दिया जाता था।
- 'शिष्ट' नामक कर से राजा की आय का प्रमुख स्रोत था

विजयनगर साम्राज्य के सिक्के

- सोने के सिक्के :- 'वराह' (सर्वाधिक प्रसिद्ध)
  - अन्य नाम - हूण या पगोडा
- चाँदी के सिक्के - 'तार'

विजयनगर साम्राज्य में समाज

- वर्ण व्यवस्था पर आधारित था।
- ब्राह्मणों को मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था।
- शतशूद्र - वे शूद्र थे जो ऊँची जाति के विशेषाधिकारों को हड़प लिया था।
- दासप्रथा प्रचलित थी
- बेसवाग - मनुष्यों का क्रय-विक्रय
- देवदासी प्रथा का प्रचलन था
- पर्दा प्रथा नहीं था।
- सती प्रथा प्रचलित थी
- लिंगायत सम्प्रदाय की विधवाओं को जीवित दफना दिया जाता था।

Scanned by CamScanner

- प्रमुख त्योहार - मध्यनवमी
- लिपासी कला - चित्रकला शैली
- मिश्रणी शैली - नृत्य एवं संगीत की मिश्रित शैली।
- बाल विवाह प्रचलित था।
- बहुविवाह भी प्रचलित था।
- वैश्यावृत्ति का प्रचलन था।

* सोना की बेटी का युद्ध - देवराय तथा बहमनी शासक।

⇒ कृष्ण देवराय की रचनाएं :-

① आमुक्त माल्यद (तेलगू)
② जाम्बवती कल्याण (संस्कृत)
③ ऊषा परिणय

* "नारायण विलास" पुस्तक - विरूपाक्ष
* आंध्र कविता का पितामह - पेड्डाना
* नन्नया ने महाभारत का तेलगू में अनुवाद किया,
* 'वीरभद्र' ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् का तेलगू भाषा में अनुवाद किया था।
* वराह सिक्कों (स्वर्ण) पर हनुमान एवं गरुड़ की आकृति का अंकन हुआ था (हरिहर के समय में)

Scanned by CamScanner

मुगल वंश

★ दिल्ली सल्तनत के पश्चात भारत में जिस वंश का उदय हुआ वो मुगलवंश था।

• भारत में मुगल राज्य की स्थापना बाबर ने 1526 ई० में की थी।

मुगल का इतिहास

• मंगोल जाति + तुर्की जाति सें के मिलन से - मुगल जाति अस्तित्व में आई।

• मंगोल का अर्थ - बहादुर।

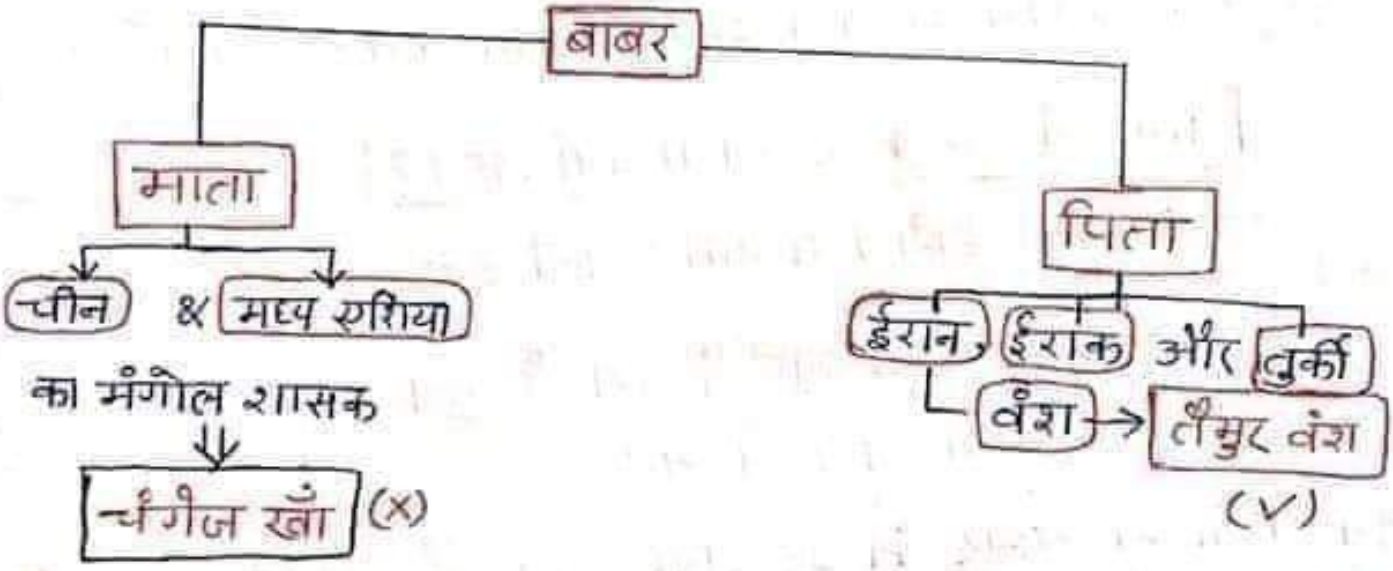

• मुगल अपने आप को मंगोल कहलाना नही पसंद करते थें, क्योंकि चंगेज खाँ का इतिहास सैंकड़ों व्यक्तियों के नरसंहार से था।

• दूसरी तरफ, मुगल, तैमुर के वंशज होने पर गर्व का अनुभव करते थें क्योंकि, उनके इस महान पूर्वज ने 1398 में दिल्ली पर नियंत्रण कर लिया था।

★ अब यहाँ से शुरू होता हैं मुगल वंश -

Scanned with CamScanner

बाबर का इतिहास

- पुरा नाम - ~~मुहम्मद~~ जहिरूद्दिन मुहमद बाबर
- जन्म - 14 Feb 1483 ई० द्रांस आक्सियान के फरगना में
- माता के पक्ष से - 14 हवाँ शासक
- पिता " " " - 5वाँ शासक
- फरगना की जागीरदारी - बाबर के पिता - उमर शेख मिर्जा के पास।
- पिता - उमर शेख मिर्जा
- माता - कुतुलुग निगार खानम
- पत्नि - माहम अनगा

★ बाबर ने जिस वंश की नींव डाली उसका नाम - चगताई वंश

बाबर ने भारत पर हमला क्यों किया?

→ मध्य एशिया में शक्तिशाली उज्बेको से पराजय का डर।
→ शक्तिशाली सफवी वंश से भय
→ उस्मानों वंश से भय

- इन तीनों से बाबर को डर बना रहता है, जिसके कारण वो अपने चाचा के पास जाता है।
- बाबर अपनी पिता की मृत्यु के पश्चात मात्र 11 वर्ष की आयु में 1494 में फरगना की गद्दी पर बैठा।

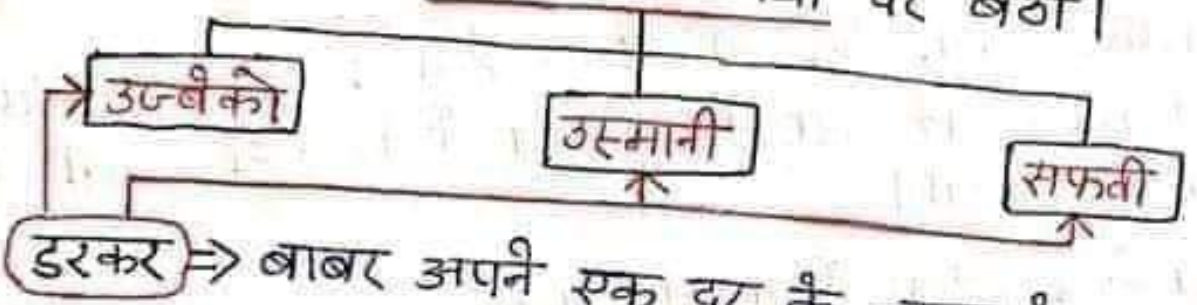

डरकर ⇒ बाबर अपने एक दुर के चाचा के पास अफगानिस्तान में चला आता है।

- 1504 में बाबर ने काबुल पर अधिकार कर लिया

CS Scanned with CamScanner

- विजय के बाद पादशाह/बादशाह की उपाधि धारण की। 1507 ई. में।
- पैतृक उपाधि - मिर्जा
- बाबर ने भारत में पहला आक्रमण 1519 में बाजौर पर किया था युसुफजाई जाति के विरूद्ध।
  इस आक्रमण में उसने भैरा के किला जित लिया।
- सर्वप्रथम बारूद तथा तोपखाने का प्रयोग कर।

युद्ध शिक्षा

★ उज्बेकों से - तुगलुमा युद्ध प्रणाली
★ ईरानियों से - बन्दुकों का प्रयोग
★ तुर्कों से - घुड़सवारी
★ मंगोल + अफगानों से - युद्ध की व्यूह रचना

- भारत जिस पर जिस समय बाबर आक्रमण किया उस समय भारत कई छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों में बँटा था।
बंगाल, मालवा, गुजरात, सिंध, कश्मीर, मेवाड़, दिल्ली, विजयनगर, बहमनी इत्यादि।

★ बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण ✓

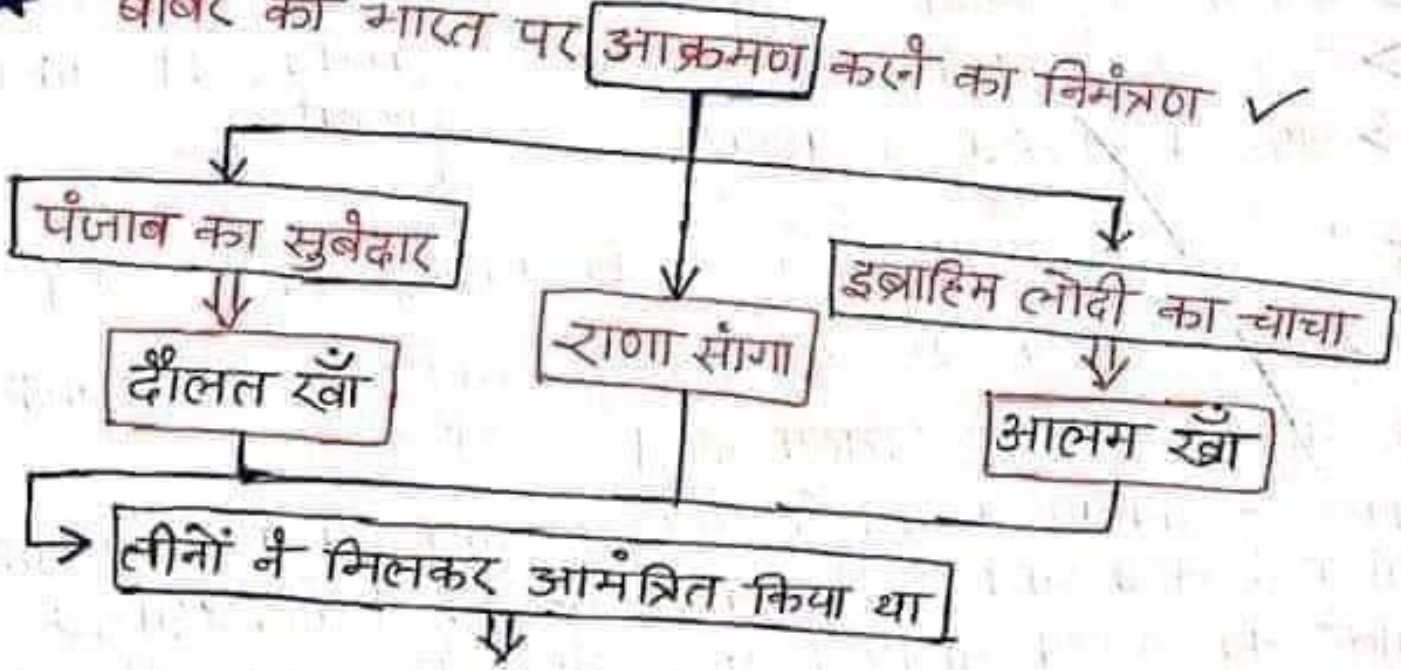

★ भारत के लोदी वंश के अंतिम शासक पर

Scanned with CamScanner

• पानीपत का युद्ध बाबर द्वारा लड़ा गया 5वाँ युद्ध था।

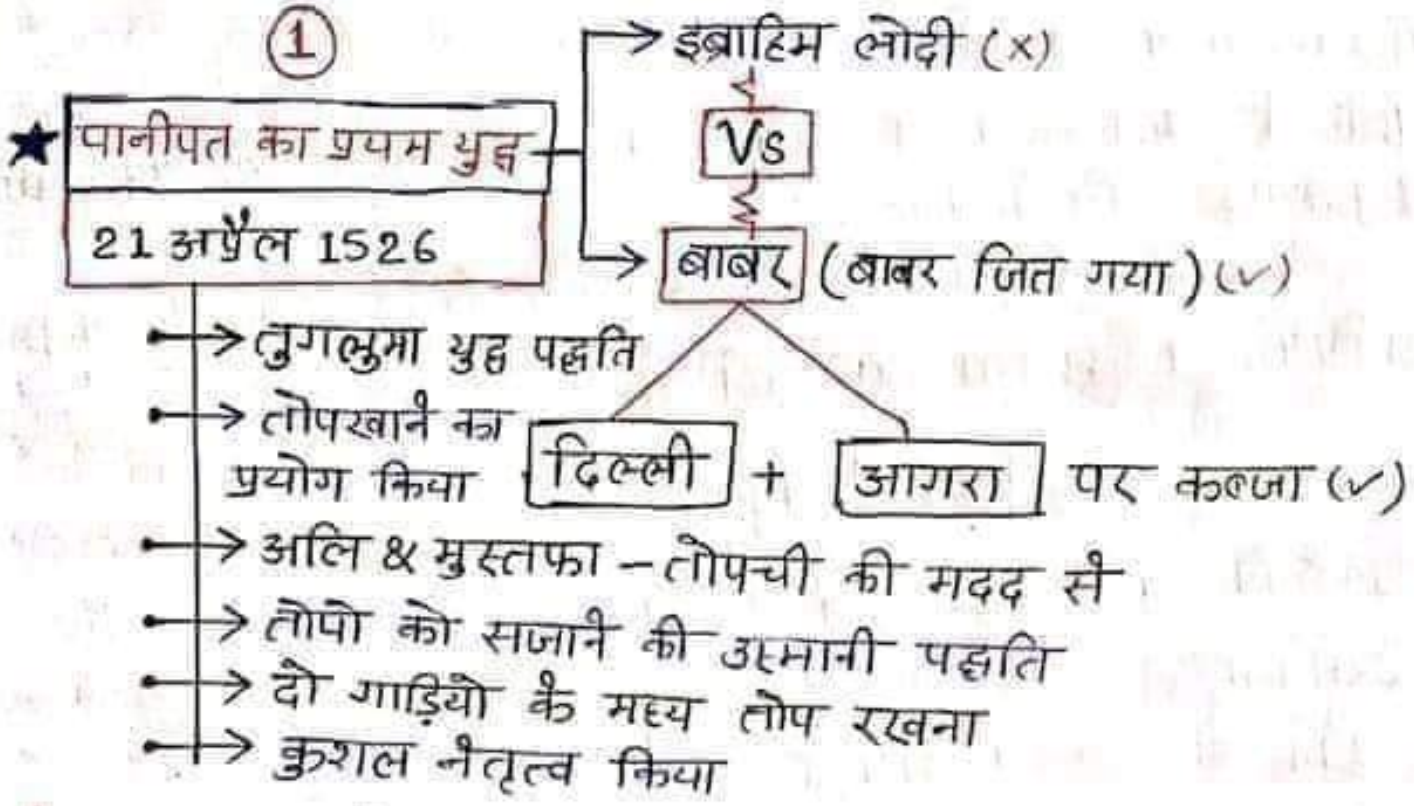

★ गुरूनानक देव इस युद्ध के प्रत्यक्षदर्शी थे।

• युद्ध जीतने के बाद बाबर ने सरदारों को उचित पुरस्कार दिया।

• प्रत्येक काबुल निवासी को बाबर ने 1-1 चाँदी के सिक्के दिए।
→ इसी उदारता के कारण बाबर को कलंदर की उपाधि मिली।

★ इब्राहिम लोदि के हारने का कारण :-
→ एकता का आभाव
→ अकुशल सैनापतित्व
→ अफगान सरदारों से क्षुब्धता

★ इसी समय हुमायूँ ने बाबर को कोहिनूर हीरा दिया।

• हुमायूँ को यें हीरा ग्वालियर के दिगवंत राजा विक्रमादित्य के परिवार से प्राप्त/मिला था।

• Note :- पानीपत के युद्ध में बाबर का साथ देने का वादा महाराणा सांगा ने किया था। किन्तु युद्ध में सहायता न की। इसलिए बाबर का अगला अभियान राणा सांगा के विरुद्ध था।

Scanned with CamScanner

2. खानवा का युद्ध (15 मार्च 1527)

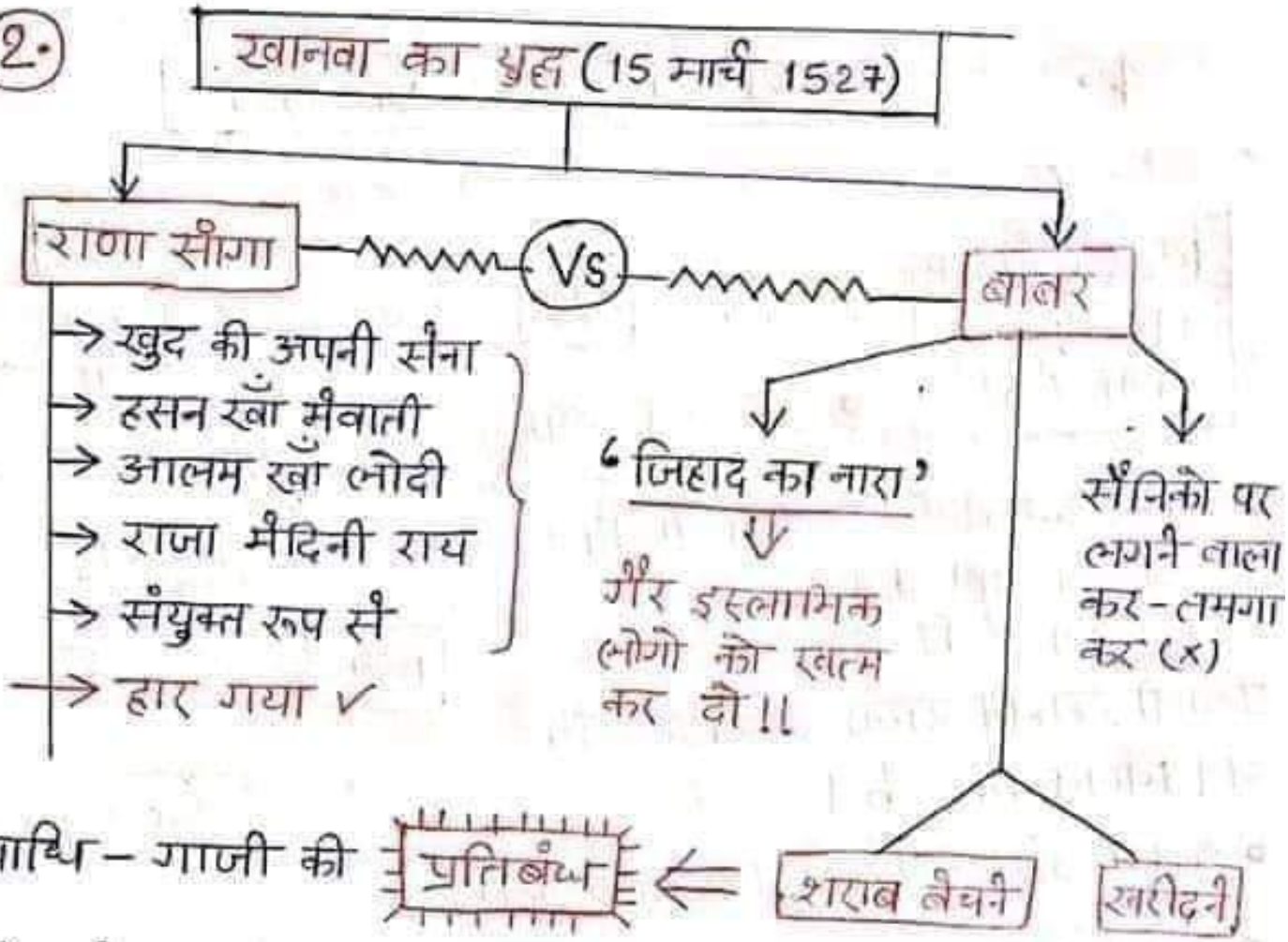

- उपाधि – गाजी की प्रतिबंध
- जीत के बाद राजपूतों के सिरों को काटकर 'मीनार' बनवाया।

3. चंदेरी का युद्ध – (29 जनवरी - 1528)

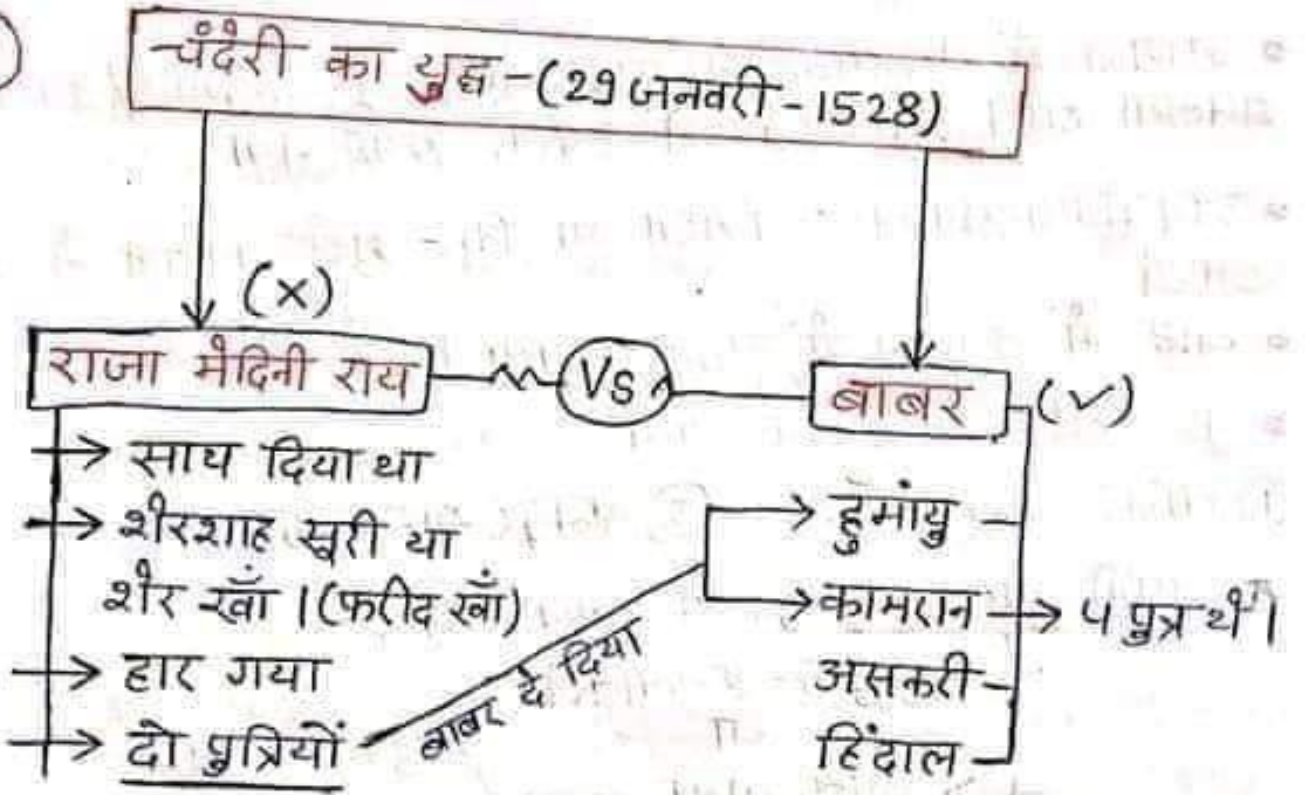

Scanned with CamScanner

4• घाघरा का युद्ध – 5 April 1529

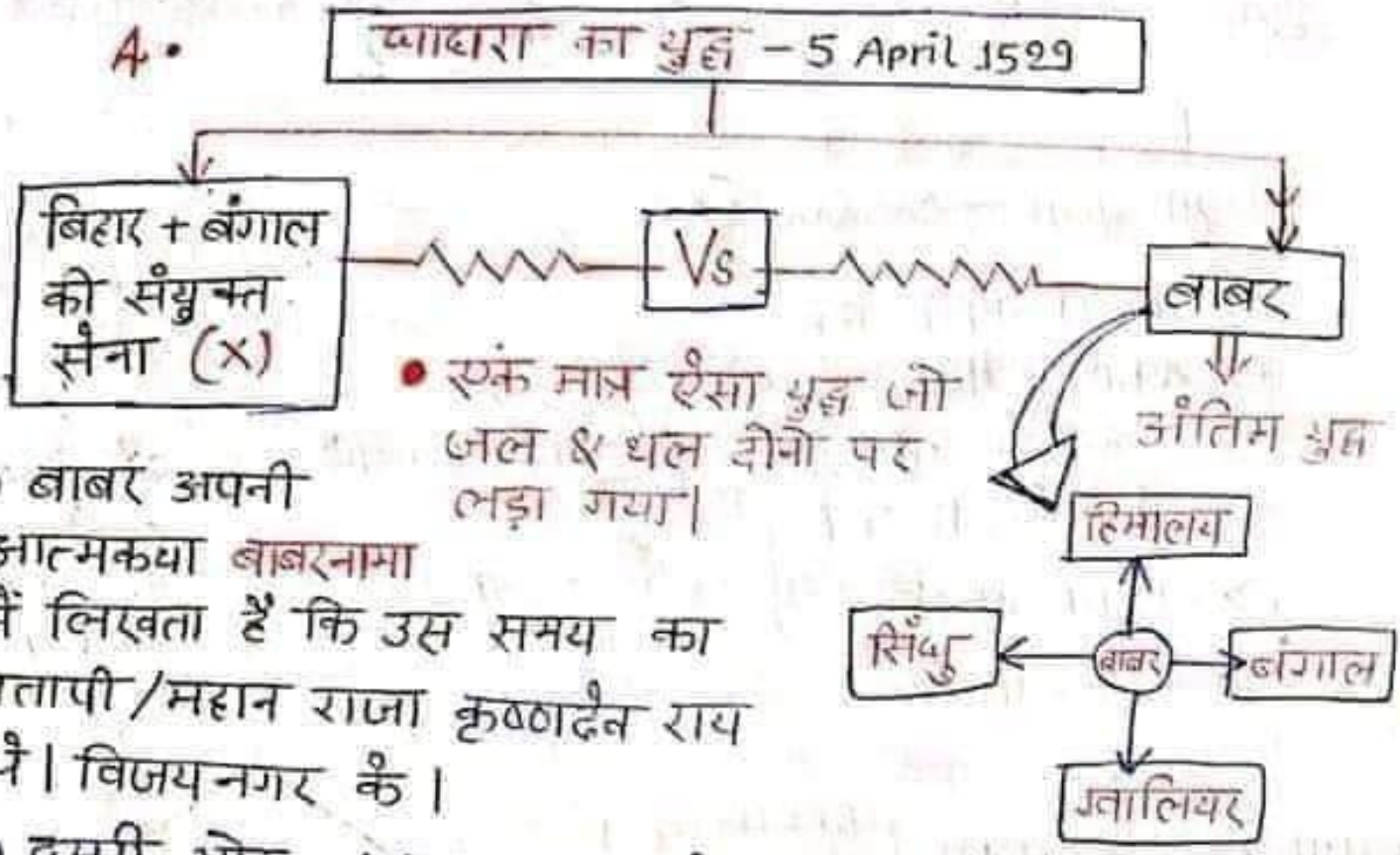

बिहार + बंगाल की संयुक्त सेना (X) — Vs — बाबर

बाबर ⇓ अंतिम युद्ध

• एक मात्र ऐसा युद्ध जो जल & थल दोनों पर लड़ा गया।

• बाबर अपनी आत्मकथा बाबरनामा में लिखता है कि उस समय का प्रतापी/महान राजा कृष्णदेव राय थे। विजयनगर के।

• दुसरी ओर - नुसरत शाह (बंगाल)

• मृत्यु - 26 Dec 1530

• स्थान - आगरा

• आगरा में ही बाबर ने एक बाग नूर अफगान/आरामबाग बनवाया था। और इसी में दफना दिया गया।

• अपनी अत्मकथा में लिखा था कि - मुझे काबुल में दफनाया जाए।

• बाद में काबुल में दफनाया गया।

• कुल तीन लोगों को भारत से बाहर दफनाया गया।

① बाबर ② जहाँगीर ③ बहादुर शाह जफर

★ अपनी आत्मकथा खुद ही लिखी थी :-

→ तुजुक-ए-बाबरी
या
→ बाबरनामा
} तुर्की भाषा में

• एक काव्य संग्रह — दीवान तुर्की
• एक पद्य शैली — मुबइयान
• रिसाल-ए-उसज की रचना/खत-ए-बाबरी
} बाबर द्वारा ✓

Scanned with CamScanner

- आगरा में ज्यामितिय विधि से एक बाग - नुर-ए-अफगान/ आरामबाग लगवाया।
- सड़कों को नापने के लिए - गज-ए-बाबरी > मापन
- ० अब्दुल रहीम खानखाना — बाबरनामा को - फारसी में अनुवाद
- अंग्रेजी में - बेवरीज के द्वारा
- अपना सिक्का चलवाया। — काबुल में इसे - सहरुख के नाम से
  - → चाँदी का था।
  - → कांधार में इसे बाबरी नाम से।

हुमायुँ का इतिहास
1530 से 1556

- मुल नाम - नासिरूद्दीन मुहम्द
- माता — माहम बेगम
- भाई — कामरान, अस्करी, हिन्दाल
- राज्याभिषेक - बाबर के मृत्यु के ठीक 3 दिन बाद - 1530
- स्थान - आगरा
- मुगल शासक पहला एवं अंतिम शासक जिसने अपने भाईयों में साम्राज्य का विभाजब किया।
- राज्यारोहण के प्रारंभिक दिनों में हुमायूँ को सबसे बड़ी चुनौती अफगानों ने दिया। हुमायुँ के समकालीन अफगान नेता शेर खाँ था।
- दुसरा सबसे प्रबल शत्रु - गुजरात का शासक बहादुरशाह

★ कालिंजर अभियान (1531) :- मुख्य उद्देश्य बहादुरशाह को रोकना किंतु असफल रहा। लेकिन रायसेन का किला जीत लिया।

मुगलशासक के रूप में
भारत में बाबर

TRICK

26 में पानी पिया

27 में सांगा संग खाना खाया

28 में चाँद पर गया

29 में महमूद के घर गया और

30 में मर गया

1526 ई. - पानीपत का प्रथम युद्ध - इब्राहिम लोदी से

1527 ई. - खानवा का युद्ध - राणा सांगा से

1528 ई. - चन्देरी का युद्ध - मेदिनीराय से

1529 ई. - घाघरा का युद्ध - महमूद लोदी से

1530 ई. - बाबर की मृत्यु - (आगरा)